साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/16-18

वर्ष : 5, अंक : 39 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 20 मई से 26 मई 2020 पेज : 4 कीमत : 3 रुपये

सुपर साइक्लोन अंफान का प्रचंड रूप, मचाई तबाही

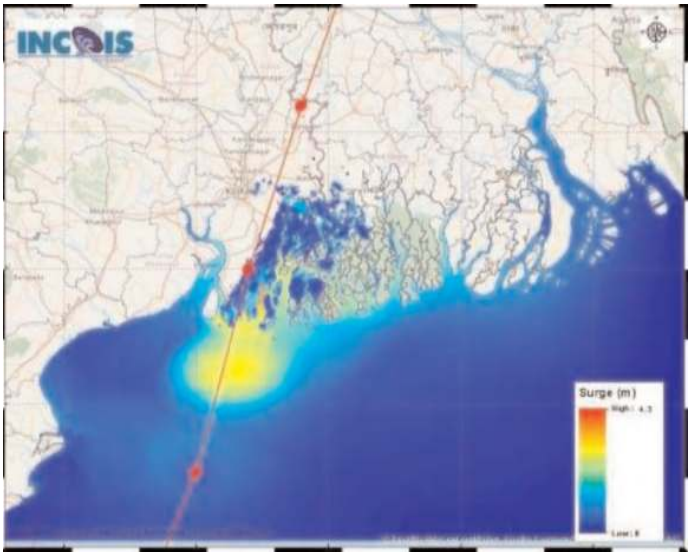

कोलकाता। चार दिन पहले बंगाल की खाड़ी में बने सुपर साइक्लोन अंफान की लैंडफॉल की प्रक्रिया दोपहर 2.30 बजे से शुरू हो गई है और पूरी प्रक्रिया लगभग 4 घंटे तक चलेगी। इस दौरान भीषण हवाएं चलेंगी और समुद्र में तेज लहरें उठेंगी।

भारतीय मौसमविज्ञान विभाग के कोलकाता केंद्र के डायरेक्टर जीसी दास ने डाउन टू अर्थ को बताया कि इस साइक्लोन के बादल का अगला हिस्सा बंगाल में प्रवेश कर चुका है और पूरी तरह से लैंडफाल की प्रक्रिया में चार घंटे लगेंगे।

भारतीय मौसमविज्ञान विभाग की तरफ से दोपहर 2 बजे जारी बुलेटिन के मुताबिक, शाम 4 बजे से ये चक्रवात पश्चिम बंगाल के दीघा और बांग्लादेश के हटिया के बीच से सुंदरवन के नजदीक लैंडफॉल करेगा। उस वक्त इसकी रफ्तार अधिकतम 185 किलोमीटर प्रतिघंटा हो सकती है। दोपहर 3 बजे की बुलेटिन के मुताबिक, अंफान अभी सागरद्वीप से महज 35 किलोमीटर दूर दक्षिण और दीघा से 65 किलोमीटर दूर पूर्वी व पूर्वीदक्षिणी हिस्से में है।

इस साइक्लोन की वजह से उत्तर 2 परगना, दक्षिण 2 परगना, कोलकाता, हावड़ा, पूर्व मिदनापुर समेत अन्य जिलों में जोरदार बारिश 19 मई की शाम से ही जारी है, जो अब और बढ़ेगी। मौसम विज्ञानियों ने बताया कि ये साइक्लोन हालांकि कोलकाता से करीब 150 किलोमीटर दूर से ही निकल रहा है, लेकिन इसके बावजूद यहां भी खासा असर देखने को मिलेगा।

जीसी दास ने कहा, फिलहाल कोलकाता में 60 से 70 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चल रही हैं और बारिश भी हो रही है। अगले कुछ समय में यहां 100 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चलेंगी। इधर, एहतियाती तौर पर सरकार ने कोलकाता के सभी फ्लाईओवरों पर वाहनों की आवाजाही पर रोक लगा दी है। जिन जिलों में चक्रवात का सबसे ज्यादा असर हो सकता है, उन जिलों में बिजली सेवा फिलहाल स्थगित कर दी गई है। कोलकाता में यूं तो हाल के वर्षों में कोई चक्रवात नहीं आया है, लेकिन सुंदरवन की तरफ जो भी चक्रवात गया है, उसने कोलकाता को प्रभावित किया। हालांकि, वर्ष 1737 में एक चक्रवात आया था, जिसने कोलकाता के दक्षिण हिस्से को बुरी तरह प्रभावित किया था। इस तूफान ने कोलकाता में सुबह 11 बजे दस्तक दी थी और इसकी रफ्तार 330 किलोमीटर प्रतिघंटा थी। तूफान के कारण कोलकाता में 3 हजार लोगों की मौत हुई थी। हालांकि वैसा प्रभाव कोलकाता में नहीं दिखेगा। मौसमविज्ञानी जेके मुखर्जी एक न्यूज चैनल को दिए इंटरव्यू में कहा कि ये कोलकाता से 150 किलोमीटर दूर से निकल रहा है, जिस कारण तेज हवाएं यहां भी चलेंगी और भीषण बारिश होगी, लेकिन यहां वैसा विध्वंस नहीं होगा। पश्चिम बंगाल के सुंदरवन विकास मंत्री मंटूराम पाखीरा ने डाउन टू अर्थ को बताया, साइक्लोन बंगाल में पहुंच चुका है। सुंदरवन की तरफ भीषण तेज हवाएं चल रही हैं। हमलोगों ने प्रभावित इलाकों से 3 लाख 20 हजार लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचा दिया है। सुंदरवन में इस साइक्लोन का दोहरा असर हो सकता है। अव्वल तो ये सुपर साइक्लोन है, जिस कारण इसका भयावह प्रभाव पड़ेगा। दूसरी बात है कि जिस वक्त ये तटीय क्षेत्र में लैंडफाल करेगा, उस वक्त ज्वार आया रहेगा। ज्वार के वक्त समुद्र का जलस्तर कई फीट बढ़ा रहता है। पिछले साल जब बुलबुल चक्रवात सुंदरवन में आया था, तब भाटा था, जिस कारण इसका बहुत प्रभाव नहीं पड़ा था, लेकिन इस बार जिस वक्त सुपर साइक्लोन लैंडफाल कर रहा है, उस वक्त ज्वार रहेगा।

मंटूराम पाखीरा ने कहा, ये सुपर साइक्लोन सुंदरवन के लिए तबाही लेकर आ सकता है क्योंकि जब ये तूफान गिरेगा तब ज्वार आया रहेगा। ये हमारे लिए चिंता का कारण है। हमारी कोशिश है कि किसी भी जान न जाए।

महामारी के कारण पर्यावरण में देखने को मिल रहा सकारात्मक बदलाव

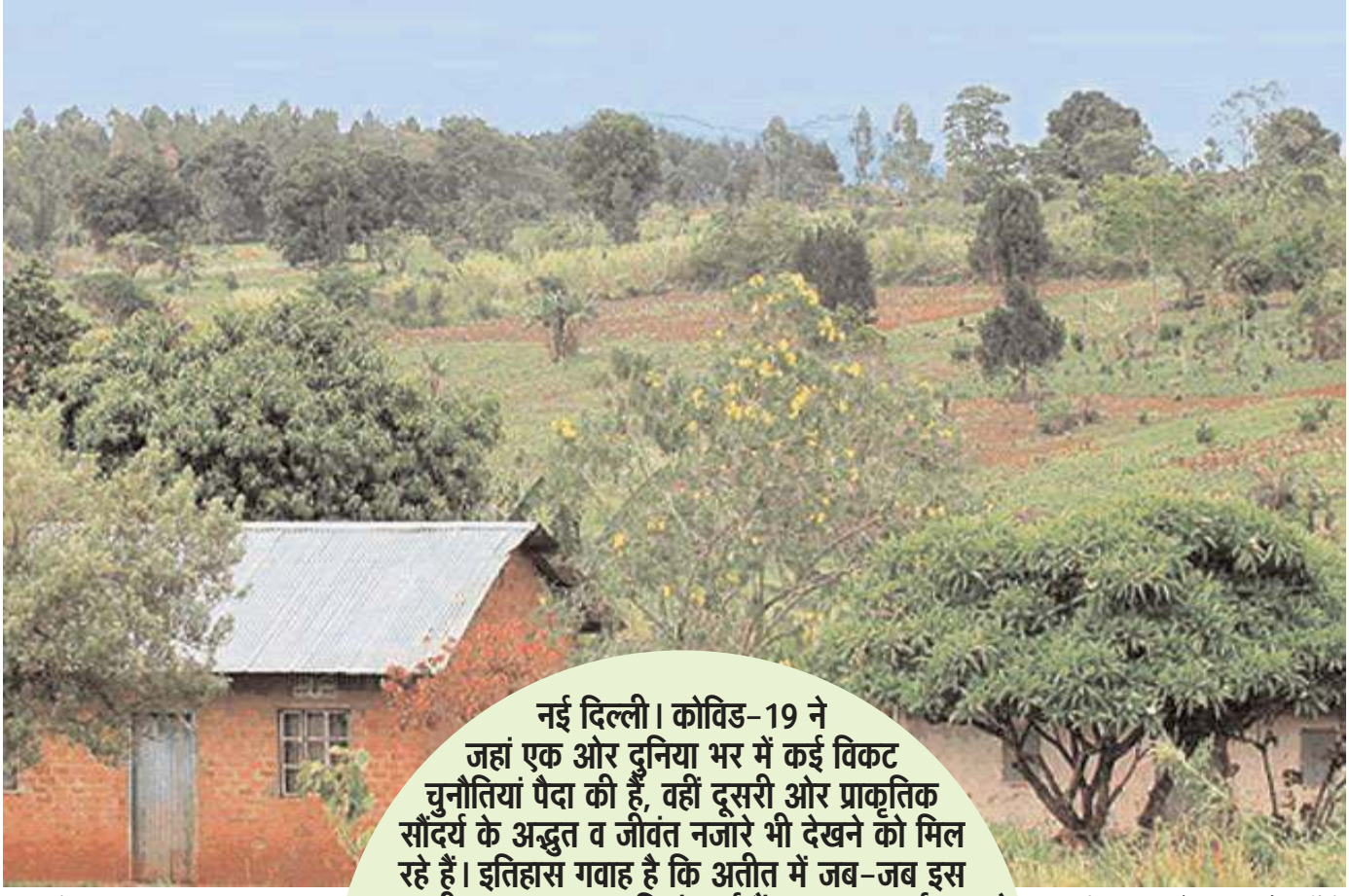

नई दिल्ली। कोविड-19 ने जहां एक ओर दुनिया भर में कई विकट चुनौतियां पैदा की हैं, वहीं दूसरी ओर प्राकृतिक सौंदर्य के अद्भुत व जीवंत नजारे भी देखने को मिल रहे हैं। इतिहास गवाह है कि अतीत में जब-जब इस प्रकार की भयानक महामारियां आई हैं, तब-तब पर्यावरण ने सकारात्मक करवट ली है। यकीनन कोरोना संक्रमण काल में प्रकृति का यह रूप मानवीय जीवन के लिए भले ही क्षणिक राहत वाला हो, परंतु जब संक्रमण का खतरा पूरी तरह खत्म हो जाएगा, तब क्या पर्यावरण की यही स्थिति बरकरार रह पाएगी जब सभी देशों के लिए विकास की रफ्तार को तेज करना न केवल आवश्यक होगा, बल्कि मजबूरी भी होगी, तब क्या ऐसे कदम उठाए जाएंगे जो प्रकृति को बिना क्षति पहुंचाए सतत विकास की ओर अग्रसर हो सकेंगे।

पर्यावरणीय समस्या का यह अल्पकालिक सुधार न तो स्थायी समाधान है और न ही वांछनीय परिणाम। हालांकि वर्तमान स्थिति को प्रकृति की ओर से दी हुई चेतावनी समझनी चाहिए जो मनुष्य की जीवन शैली और विकास प्रक्रिया के तौर-तरीकों को बदलने का अवसर प्रदान करता है। इतिहास ऐसे कई उदाहरणों से भरा पड़ा है जो यह साबित करता है कि महामारियों का गहरा प्रभाव पर्यावरण पर पड़ा है, परंतु महामारी के फौरन बाद आर्थिक विकास की रफ्तार को बढ़ावा देने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का बड़े पैमाने पर अमर्यादित दोहन भी किया गया है। ऐसे में कोरोना महामारी से उत्पन्न अल्पकालिक पर्यावरणीय सुधार से बहुत अधिक खुश होने की जरूरत नहीं है, बल्कि मानव, प्रकृति और आर्थिक विकास के अंतर्संबंधों को नए सिरे से परिभाषित करने की आवश्यकता है।

मनुष्य-प्रकृति के बीच असंतुलन का दुष्परिणाम

कई पर्यावरणविदों का मानना है कि यह वायरस मनुष्य और प्रकृति के बीच पैदा हुए प्राकृतिक असंतुलन का दुष्परिणाम है। वैज्ञानिकों का कहना है कि अत्यधिक मांस का उत्पादन, रोगाणुरोधी प्रतिरोध और बढ़ते वैश्विक तापमान जैसे कारक वन्यजनित विषाणुओं को मनुष्यों में फैलने और भयावह रूप धारण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। साथ ही जलवायु संकट विषाणु जनित रोगों से लड़ने के प्रति हमारी प्रतिरोधक क्षमता भी कम कर रही है। दरअसल, विगत कुछ दशकों से हो रहे पारिस्थितिकीय परिवर्तन, बेरोकटोक आर्थिक विकास और प्राकृतिक संसाधनों के बेतहाशा दोहन ने पारिस्थितिकीय तंत्र के अनुचित तथा असंतुलित प्रयोग को बढ़ाया है।

व्यापक स्तर पर घटी खनिज संपदा

बढ़ती जनसंख्या ने शहरीकरण एवं औद्योगीकरण का विस्तार किया जिससे व्यापक स्तर पर खनिज संपदा घटी है और वनोपज का दायरा सिमट गया है। इससे जैविक और प्राकृतिक असंतुलन की स्थिति पैदा हुई है। पर्यावरणीय विसंगतियों का खुलासा करती विश्व मौसम विज्ञान संगठन की रिपोर्ट 'द स्टेट ऑफ द ग्लोबल क्लाइमेट' बताती है कि हाल के वर्षों में ग्लोबल वार्मिंग के कारण तापमान बढ़ोतरी के कई रिकॉर्ड टूटे हैं। जहां वर्ष 2019 सबसे गर्म वर्ष रहा, वहीं वर्ष 2010-2019 के दशक को सबसे गर्म दशक के रूप में रिकॉर्ड किया गया।

पर्यावरणीय क्षति केवल जैव-विविधता को ही नुकसान नहीं पहुंचाती, मानवीय जीवन को भी बदतर स्थिति में ले आती है। रिपोर्ट बताती है कि प्राकृतिक आपदाओं की वजह से 2018 में दुनिया में 82 करोड़ लोग भुखमरी के कगार पर थे और लगभग 67 लाख लोग विस्थापित हुए। ये तथ्य हमें सोचने पर मजबूर करते हैं कि आखिर पिछले कुछ दशकों में ऐसा क्या हुआ कि प्रकृति की ये दुर्गति हुई है। यकीनन संकट के इस दौर में मनुष्य के अति-भौतिकवाद, उत्पादनवाद और उपभोगवाद को विकास का पर्याय मान लेने की मानसिकता पर सवाल उठाहै। आधुनिकता की चकाचौंध से लोगों में व्यक्तिवाद और सुखवाद की प्रवृत्ति बढ़ी है। मानवीय उत्थान के लिए तो ये चीजें अच्छी लगती हैं, लेकिन नई-नई वैज्ञानिक तकनीकों द्वारा पारिस्थितिकी तंत्र को नियंत्रित करने की मनोवृत्ति ने पर्यावरणीय विसंगति को जन्म दिया है।

सुधर रही है मिट्टी की सेहत और हवा की गुणवत्ता

कोरोना संक्रमण से निपटने के लिए चल रहे देश व्यापी लॉक डाउन से भले ही आम जनजीवन प्रभावित है, लेकिन मौसम विशेषज्ञों की मानें तो आने वाले दिनों में पर्यावरण पर इसका काफी सकारात्मक असर पड़ेगा। इससे मिट्टी, पानी व हवा की गुणवत्ता में सुधार होगा। पारिस्थितिकी तंत्र (इको सिस्टम) दुरुस्त होने से खेतों की उर्वरा शक्ति बढ़ेगी। मित्र कीटों की संख्या बढ़ेगी। शत्रु कीटों की संख्या कम होने से वार्षिक व बहु वार्षिक फसलों को लाभ होगा। जिससे उत्पादकता बढ़ेगी। हवा शुद्ध होने से लोगों की सेहत दुरुस्त रहेगी।

हवा की भी बढ़ी गुणवत्ता

वाहनों के नहीं चलने से हवा की गुणवत्ता में भी सुधार हो रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार हवा में सुपरफाइन व अल्ट्राफाइन कण का फैलाव भी न्यूनतम हुआ है। कृषि विज्ञान केंद्र थरियांव-फतेहपुर के कृषि मौसम विशेषज्ञ सचिन कुमार शुक्ला के अनुसार जहां फरवरी-मार्च में एयर क्वालिटी इंडेक्स 150 से 200 था, इन दिनों 50 से 100 के बीच है। यह एक आदर्श मात्रा है। स्वच्छ हवा से दमा, एलर्जी, हृदय रोग आदि से ग्रसित लोगों की सेहत सुधरेगी। शुद्ध ऑक्सीजन मिलने से लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ेगी।

सुधर रही मिट्टी की सेहत

जैविक व गोबर की खाद (पांस) का इस्तेमाल होने से मिट्टी की सेहत सुधरेगी। डीजल चालित गाड़ियों के बंद रहने से खतरनाक सीसा (लेड) व कार्बन मोनो डाईऑक्साइड की मात्रा मिट्टी में नहीं पहुंच रही है। शांत वातावरण में हर ओर पक्षियों के समान रूप से आवाजाही से मिट्टी में मौजूद कीड़े-मकोड़ों की संख्या कम होगी। गौरतलब है कि ये पक्षी मिट्टी में मौजूद टिड्डे जैसे शत्रु कीटों को अपना आहार बनाते हैं।

नदियों का पानी हुआ निर्मल

गंगा यमुना सहित अन्य नदियों का पानी इन दिनों निर्मल दिखने लगा है। नदियों, तालाबों व दूसरे जलकरों में घरों व फैक्ट्रियों के अपशिष्ट पदार्थ बहाए जाने की मात्रा काफी कम हुई है। इससे जलीय जीवों की संख्या में वृद्धि होगी। जिससे पूरा इको सिस्टम सुचारू पूर्वक संचालित होगा। तटवर्ती इलाके के भूगर्भीय जल में आर्सेनिक व आयरन की मात्रा में कमी होगी।

जानिए पारिस्थितिकी तंत्र को

कृषि विज्ञान केन्द्र के कृषि वैज्ञानिकों ने पारिस्थितिकी तंत्र के बारे में भी लोगों को जानकारी दी है कि पारिस्थितिकी तंत्र एक प्राकृतिक इकाई है। जिसमें एक क्षेत्र विशेष के सभी जीवधारी, पौधे, जानवर पर्यावरण के साथ अंतक्रिया कर एक जैविक इकाई बनाते हैं।

पर्यावरण के लिए चिंता बच्चों में ज्यादा होती है

गैल एफ. मेलसन अमेरिका की परड्यू यूनिवर्सिटी में ह्यूमैन डिवेलपमेंट एंड फैमिली स्टडीज की प्रोफेसर रह चुकी हैं। जानी-मानी डिवेलपमेंटल साइकॉलजिस्ट मेलसन ने हमें बताया कि कैसे जीवों की तमाम तरह की प्रजातियां हमारे बच्चों को खुद के बारे में समझ बढ़ाने में मदद करती हैं-

बचपन और जिंदगी के विकास की नींव, दोनों के लिए जीव-जंतु और कुदरत की गोद अहम हैं। कुदरत इस दुनिया की सबसे जटिल व्यवस्था है- इंसानों द्वारा बनाई गई किसी भी मशीन या बनावटी माहौल से ज्यादा जटिल। और सच यही है कि बच्चे कुदरत से जुड़ी सूचनाओं को समझकर ही इस जटिल व्यवस्था से पार पा सकते हैं। खास बात यह है कि कुदरत की आश्चर्यजनक सुंदरता ही बच्चों में इसके प्रति लगाव पैदा करती है। कुदरत मानव के क्रमिक विकास से जुड़ी हुई है और खुद मानव भी दूसरे तमाम जीवों के साथ सहअस्तित्व में रहते हुए यहां तक पहुंचा है। संक्षेप में आप कह सकते हैं कि बच्चों का जानवरों या फिर जीवित प्राणी मात्र से संबंध

उनके विकास के हर पहलू, फिर चाहे वह सामाजिक हो, नैतिक हो, भावनात्मक हो या फिर ज्ञान संबंधी, को प्रभावित करता है।

बच्चे जब कुछ नई या खूबसूरत-सी चीज देखते हैं तो उनमें जो आश्चर्य का भाव आता है, वह अनोखा होता है। वयस्क अगर उस भाव को महसूस कर लें तो उन्हें इसका फायदा हो सकता है। असल में यह जो अभिभूत करने वाली भावना होती है, वह कुछ देर के लिए ही सही, हमारी बेचैनी को दूर कर देती है। बेशक ऐसे में बच्चों जैसा कौतूहल, वयस्कों के लिए थेरपी का काम करता है। यह एंग्जाइटी को दूर करता है। बच्चों में उम्र के साथ इस मामले में समझ धीरे-धीरे बढ़ती है कि दूसरे के दिमाग में क्या चल रहा है। सामने वाला कैसा बर्ताव करेगा, यह जानने के लिए बच्चों के लिए यह जानना जरूरी है कि सामने वाला आखिर सोच क्या रहा है। बेशक यह बेहद चुनौतीपूर्ण काम है क्योंकि स्थिति को भांपने की बच्चों की क्षमता और अन्य किसी की क्षमता में बड़ा फर्क होता है। थिअरी ऑफ माइंड दूसरे के दिमाग को पढ़ने की क्षमता से जुड़ा है और जानवरों में यह क्षमता गजब की होती है। यह मानवों से काफी अलग होती है। ऐसे में जानवर बच्चों को यह चुनौती पेश करते हैं कि वे अपनी कल्पनाशीलता को उस लेवल पर ले जाएं कि अपने से बिल्कुल अलग दिमाग में क्या चल रहा है, यह पता कर लें।

है मज़दूर का मई... या मई का मज़दूर...

है मज़दूर का मई या मई का मज़दूर,
दिवस को छोड़िए आज है वो वक्त से मजबूर
पाँव में छाले, होंठों पर पपड़ी और उठाए सिर पर गठरी,
तिस पर ये तपती दोपहर भभकती है जैसे तंदूर.

जीवन चलने का नाम, चल ही तो रहा है,
कदम को क्या आंके, मील भी कहाँ गिन पा रहा है.
उसके रास्ते में देवदूतों ने किया इंतज़ाम बड़ा है,
लिए खाना-पानी, दवाई और चप्पल वो खड़ा है.

दूरी जिसे हवाई जहाज, नापने का दम भरते थे
वो मेरे भाई-बहनों ने कदमों से नाप दी,
राह में मिले हर कंकड़, पत्थर और दुश्वारी को
अपने लयबद्ध कदमों की ताल से थाप दी.

क़िस्मत ऐसी की विपदा शुरू कहीं से भी हो
आख़िर में लपेटे में आता वही है,
जो तानता था कभी गगनचुंबी इमारतें
उसी के लिए राह और घड़ी रुक सी गयी है.

मुँह पर कपड़ा, पेट पर कपड़ा
पर तन नंगा है
इस पर भी चेहरे पर मुस्कान
शायद यही कठौती में गंगा है.

डॉ सोनल मेहता

वो ज़मीन जिसे बंजर समझ कर छोड़ दिया था
और शहर की चमक को अपने ख़्वाबों में सिया था.
आज फिर कदम लौट चले हैं उसे अपनाने को
अपने मेहनत के पसीने से सींच, उस पर अन्न उगाने को.

हो चाहें राहें कठिन और उन पर विपदा हो भरपूर
पर हौसले का पहाड़ और मेहनत की गहराई है मजदूर.

पर्यावरण हुआ साफ, राज्य सरकारें इसे बरकरार रखने की कोशिश करें : जावड़ेकर

नई दिल्ली। पूरा देश इन दिनों को कोरोना वायरस से जूझ रहा है। कोरोना संकट के कारण देश में लॉकडाउन 4.0 का आगाज हो चुका है। इसके बावजूद इस महामारी का कहर जारी है। वहीं, केन्द्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने कहा है कि लॉकडाउन के दौरान देश का पर्यावरण काफी स्वच्छ हुआ है। लिहाजा, राज्य इसे आगे भी बनाए रखने की कोशिश करें।

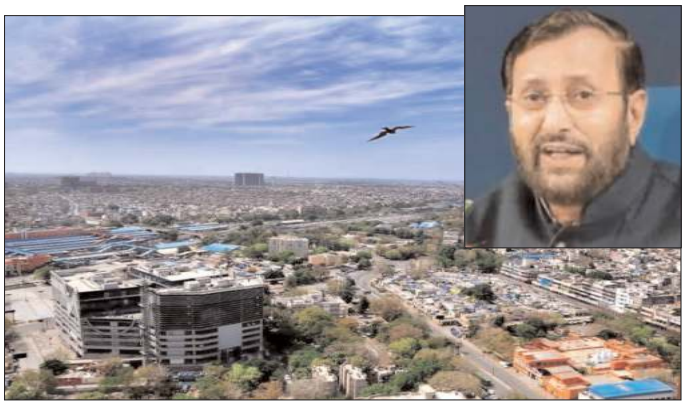

पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने कहा कि लॉकडाउन के कारण देश में कई तरह की गतिविधियों पर प्रतिबंध लगी है। जिसके कारण पर्यावरण यानी हवा-पानी ज्यादा साफ हो गया है। उन्होंने राज्य सरकारों को पत्र लिखकर कहा है कि इस बेंच मार्क बनाकर आगे भी पर्यावरण को स्वच्छ रखने की कोशिश करें। उन्होंने बताया कि पिछले कुछ दिनों में ऐसी खबरें सामने आई है कि कई जगहों पर गंगा पानी पीने लायक हो गया है। जावड़ेकर ने कहा कि उत्तरारखंडमें भी कई जगहों पर गंगा का पानी योग्य हो चुका है।

केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि पानी के साथ-साथ हवा भी काफी साफ हुआ है। उन्होंने कहा कि वायु प्रदूषण कम होने के कारण हिमालय तक साफ दिख रहा है। जावड़ेकर ने कहा कि पंजाब, यूपी, बिहार के कई इलाकों से हिमालय दिख रहा है। इसका मतलब ये है कि वायु प्रदूषण बेहद कम हो गया है। इसके अलावा कई इलाकों से एवरेस्ट की चोट तक साफ नजर आ रही है। उन्होंने कहा कि ऐसे में राज्य सरकारों के पास यह सुनहरा मौका है कि कोई नया फैसला लेने से पहले पर्यावरण का जरूर ध्यान में रखे। ताकि वातावरण जितन अभी स्वच्छ है, उतना ही आगे बना रहे। राज्यों के सभी मुख्यमंत्रियों को पत्र लिखते हुए प्रकाश जावड़ेकर ने अनुरोध किया है कि इस समय को बेंच मार्क बनाकर आगे की योजना पर काम करें। सभी सरकारों को प्रदूषण के नियमों को बेहद सख्ती से पालना करना होगा और वर्तमान पर्यावरण को बरकरार रखने के लिए नई योजनाओं के तहत काम करनी चाहिए। साथ ही उन्होंने राज्य सरकारों से जनता को भी जागरूक करने के लिए कहा है। ताकि, हमारे पास बेहतर पर्यावरण हो सके।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008